DR.BRR GOVERNMENT DEGREE COLLEGE,
डॉ.बूर्गुला रामकृष्ण राव शासकीय स्नातक महाविद्यालय,
JADCHERLA,जड्चेर्ला
MAHABUBNAGAR DIST, TELANGANAस
जिला: महबूब नगर, तेलंगाना राज्य

Department of Hindi
हिन्दी –विभाग

Student Study Project - "Hindi KaMahatva"

छात्र अध्ययन परियोजना कार्य - " हिन्दी का महत्व "

प्रस्तुति / Submitted by

S.No.	Name of the student	Class	H.T.No
1	T.Maheshwari	B.Sc. MPCs 2year	20033006441056
2	Y.Anusha	B.Sc.MPCs2year	20033006441059
3	Maheruba Begum	B.Sc BZCA2year	20033006475005
4	ShagaSandhya	B.Sc MECs2year	20033006575002
5	AshwiniSrilekha	B.Com 2year	20033006405005

Supervisor

Dr.K.Narsimha Rao
Department of Hindi

DR.BRR GOVT. DEGREE COLLEGE,

JADCHERLA

Certificate

This is to certifythat the Present Project work entitled "HindikaMahatva" is the Bonafide work of 1.T.Maheshwari,2.Y.Anusha 3.Meharuba Begum 4. ShagaSandhys 5.Asheini Srilekha. under the Supervision of Dr.K.NarsimhaRao . Asst.Prof of Hindi. Dr.BRR.Govt.Degree College,Jadcherla. No part of this work has been submitted to any other University for the award of any Degree.

Date : 12/2/2022

Dr.K.Narsimha Rao

Dept of Hindi

HEAD
Department of Hindi
Dr. BRR. Govt. Degree College
JADCHERLA-509 301
Dist. Mahabubnagar (T.S.)

Principal

Principal
Dr. BRR Government Degree College
Jadcherla, Dist. Mahabubnagar

DR.BRR GOVT. DEGREE COLLEGE,

JADCHERLA

DECLARATION

We hereby declare that the investigation results incorporated in the present Study Project entitled" HindikaMahatva" were originally carried out by us under the Supervision of Dr.K.Narsimha Rao . Asst.Prof of Hindi. Dr.BRR.Govt.Degree College, Jadcherla. No part of this work has been submitted to any other University for the award of any Degree.

Name of the student	Class	H.T.No	Signatur
T.Maheshwari	B.Sc. MPCs 2year	2003300644105 6	
Y.Anusha	B.Sc.MPCs2year	2003300644105 9	Y. Anusha
Maheruba Begum	B.Sc BZCA2year	2003300647500 5	Maheruba bega
ShagaSandhya	B.Sc MECs2year	20033006575002	Sandhya
AshwiniSrilekha	B.Com 2year	20033006405005	A. Srilekha

Date : 12/2/2022

ACKNOWLEDGEMENTS

In the accomplishment of this project work successfully, many people have best owned upon us their blessing and the heart pledged support, this time we are utilizing to thank all the people who helped us to complete this project,

We would like to thank our most respectedDr.**K.Narsimha Rao, Asst. Prof.of Hindi,**DrBRR Govt. Degree College, Jadcherla, Affiliated to Palamuru University, Mahabubnagarforproviding necessary facilities to carry out this project worksuccessfully.

With Honor and Sincere note of gratitude, we specially thank to principal of our esteemed institute **DR. CH. APPIYA CHINNAMMA. Principal ,** Dr. B.R.R. Govt. Degree College, Jadcherla for her most valuable suggestions and encouragement during course of study.

धन्यवाद ज्ञापन

इस छात्र अध्ययन - परियोजना कार्य को करने की प्रेरणास्रोत एवं प्रोत्साहन देने वाली आदरणीय प्राचार्या **डॉ.अप्पीय चिन्नम्मा जी** के प्रति हम श्रद्धा पूर्वक नमन करते हैं, जिनके अतुलनीय वात्सल्यपूर्ण शब्द परियोजना - कार्य करने के प्रति ऊर्जा का काम करती रही हैं। आपके आशीर्वाद एवं कृपा हम पर सदा के लिए बरसते रहें यही प्रार्थना है।

इस छात्र - परियोजना कार्य करने में सम्पूर्ण सहयोग देने वाले श्रद्देय गुरुजी **डॉ . नरसिंह राव कल्याणी जी** सहायक आचार्य , हिन्दी विभाग, को धन्यवाद प्रकट करना मात्र एक औपचारिकता है। आपके सुझाव एवं सूचनाएँ इस परियोजना कार्य को सुंदर एवं व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करने में बहुत-बहुत योगदान दिये हैं। आपके प्रति हम आभार व्यक्त करते हैं।

और अंत में अपने अध्यापकों , मित्रों एवं समस्त **डॉ.बूर्गुला रामकृष्ण राव शासकीय स्नातक महाविद्यालय, जड्चेर्ला** परिवार के प्रति हम हृदय गहनतल से धन्यवाद अर्पित करते हैं, जिनकी शुभकामनायें सदा हमारे साथ हैं।

****

Abstract

Hindi Ka Mahatav(Importance of Hindi)

"Importance of Hindi" is the theme of this project work. Under this, the study of the origin and development of Hindi language is to be done. In this project work, the importance of Hindi language has to be underlined in view of the development sequence of Hindi language. In the course of development of Hindi, highlighting the Indian social background, the role of Hindi is to be clarified as a language that develops emotional unity.

In the present era, while studying the nature of Hindi, the place of Hindi as a international language has to be determined. To study the development of Hindi in the field of Information and Technology (Internet). To study about the prevalence and propagation of Hindi in the context of India.

The credit of propagating Indian culture all over the world goes to the only Hindi language. The mother of language and the dignity of literature Hindi language has also been the language of mass movements. Today, western culture is being adopted in India, due to which the English language has increased in all areas. Even though we do use Hindi in real life, most of the English language is used in the corporate world, which is a shameful thing for us. Still, seeing the increasing popularity of Hindi in the world, it would not be wrong to say that Hindi is the language of the

future. As an Indian it is our duty that we should also work towards increasing the importance of Hindi.

Hindi language is also gaining its hold on the Internet. In today's time, Hindi language is gaining its identity from newspaper to Hindi blog. Famous websites like Google and Wikipedia are making every effort to make Hindi accessible to every person. Understanding the importance of Hindi language (Hindi ka Mahatva), they developed translator, search, software etc. on the Internet, which made it easier for people to know Hindi. In today's time, information about every important thing is being found in Hindi on the Internet, due to which Hindi is becoming more and more popular. The identity of Hindi is being established in every corner.

विषय सूचिका

रूपरेखा

Hindi Students Study Project – Synopsis

1.प्रस्तावना

2.हिंदी भाषा का विकास

3. हिंदी भाषा का विकास क्रम

4.हिंदी भाषा का महत्व

5.हिंदी- एक भावात्मक भाषा

6.इंटरनेट युग में हिन्दी

7.हिंदी भाषा के क्षेत्र

8.उपसंहार

रूपरेखा

Hindi Students Study Project – Synopsis

1. Title: शीर्षक: हिन्दी का महत्व

2. Statement of the Problem or Hypothesis :समस्या या परिकल्पना काविवरण:

"हिन्दी का महत्व" यह परियोजना कार्य का विषयहै। इसके अंतर्गतहिन्दी भाषा की उत्पत्ति व विकास का आध्यन करना है।इस परियोजना कार्य में हिंदी भाषा के विकास क्रमको देखते हुये हिन्दी भाषा के महत्व को रेखांकित करना है। हिन्दी के विकास क्रम में भारतीय सामाजिक पृष्ठभूमि उजागर करते हुये भावात्मक एकता विकसित करनेवाली भाषके रूप में हिन्दी की भूमिका को स्पष्ट करना है।

वर्तमान युग में विश्वपटल पर हिन्दी के स्वरूप का आध्यान करते हुये विश्व भाषा के रूप में हिन्दी के स्थान को निर्धारित करना है। सूचना एवं प्राद्योगिकी (इंटरनेट) के क्षेत्र में हिन्दी के विकास का अध्ययन करना है।

भारत के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी की व्यापकता तथा प्रचार-प्रसार के बारें में अध्ययन करना है।

3.Aims and Objectives लक्ष्य&उद्देश्य: इस परियोजना कार्य के

लक्ष्यएवं उद्देश्य निम्न प्रकार से हैं -

1हिन्दी भाषा की उत्पत्ति तथा विकास के बारे में जानकारी प्राप्त करना है।

2. हिन्दी के विभिन्न रूपों के बारे में जानकारी प्राप्त करना है

3. हिन्दी के विकास क्रम में भारतीय सामाजिक पृष्ठभूमि और भावात्मक एकतामें हिन्दी की भूमिका को स्पष्ट करना है।

4.विश्वपटल पर हिन्दी के स्वरूप का आध्यान करना ।

5. सूचना एवं प्राद्योगिकी (इंटरनेट) के क्षेत्र में हिन्दी के विकास का अध्ययन करना है।

6.भारत में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के बारें में अध्ययन करना है।

4. Review of Literature साहित्य की समीक्षा:

हिंदी भाषा के विकास के संदर्भ में भारतीय भारतीय भाषाओं में हिंदी की स्थिति को उजागर करना है और हिंदी भाषा की उत्पत्ति तथा उसके विकास के बारे में अध्ययन करना इस परियोजना कार्य का विषय है। भारत में हिंदी बहुत ही तेजी से विकसित होने वाली भाषा के रूप में जानी जाती है । वर्तमान परिदृश्य में राजभाषा के रूप में ,संपर्क भाषा के रूप में, राष्ट्रभाषा के रूप में तथा विश्व भाषा के रूप में हिंदी बहुमुखी प्रतिभा के साथ आगे बढ़ रही है । आज सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारतीय भाषाओं में सबसे अधिक प्रयोग में आने वाली भाषा के रूप में हिंदी जानी जाती है। रोजगार के क्षेत्र में हिंदी के अवसर ज्यादा हैं। हिंदी राष्ट्रीय एकता की प्रतीक तो है ही इसके साथ साथ भावात्मक एकता और भारतीय संस्कृति के प्रतीक के रूप में भी हिंदी जानी जाती है।हिंदी के विकास में प्रयोजनमूलक हिंदी का विकास हो रहा है। जनसंचार के माध्यम में, पत्रकारिता के क्षेत्र में, अनुवाद के क्षेत्र में हिंदी का महत्व आज बढ़ते जा रहा है इसी का अध्ययन करना इस परियोजना कार्य का मुख्य विषय है

5. Research Methodology शोध क्रियाविधि:- शोध के कई पर्यायवाची शब्द हैं। जैसे –अनुसंधान, अन्वेषण, गवेषण,खोज आदि। सादरणतया साहित्य में शोध और अनुसंधान शब्द ही प्रचलित हैं। किसी विषय का उसके विभिन्न पक्षोंकों तथ्यों ,तत्वों, आधारों, तर्क शीलता आदि कसौटियों पर परखना ही शोध कहलाता है। शोध के कई प्रकार हैं। जैसे – सर्वेक्षण पद्धति , आलोचनात्मक पद्धती ,समाजशास्त्रीय पद्धति, ऐतिहासिक पद्धति, समस्यात्मक पद्धति आदि।

हमने इस परियोजना कार्य के लिए समाजशास्त्रीय शोध विधि को अपनाते हुये विभिन्न हिन्दी तथा अन्य भाषाओं के पत्र-पत्रिकाओं का अध्ययन करते हुये

हिन्दी केमहत्व को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

6. Analysis of Data. डेटा का विश्लेषण:- हिंदी के महत्व को जानने के लिए विभिन्न संस्थाओं के द्वारा प्रकाशित तथा पत्र–पत्रिकाओं का अध्ययन करते हुए हिंदी की पुस्तक भूमि के आधार पर आधुनिक समाज में हिंदी का विकास किस प्रकार हो रहा है इसे देखा गया है विशेष रूप से विभिन्न संस्थाओं के पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से तथा इंटरनेट पर उपलब्ध आंकड़ों के द्वारा हिंदी के महत्व को आंका गया है इस प्रकार मिले आंकड़ों तथा तथ्यों के आधार पर हिंदी के महत्व को निर्धारित करने का प्रयास किया गया है

इसके लिए हमने जड्चेरला में स्थित शाखा-ग्रंथालय,महबूब नगर में स्थित जिला ग्रंथालय आदि में जाकर परियोजना सामाग्री को संग्रहीत किया है। इस सामग्री को व्यवस्थि ढंग से निर्धारित परियोजना कार्य के अनुसार उपयोग किया गया है।

7.Findigs जाँच - परिणाम:- इस अध्ययन कार्य से निष्कर्ष यही निकलता है कि भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में भी हिंदी का महत्व बढ़ता जा रहा है। कुछ वर्ष पूर्व भारत में कुछ गलतफहमियों के कारण हिंदी का विरोध होता रहा । मगर आज जो भ्रामक तथ्य थे उससे दूर होकर लोग हिंदी को अपना रहे हैं। आज विश्व के लगभग डेढ़ सौ विश्वविद्यालयों में और कई देशों में हिंदी का अध्ययन व अध्यापन हो रहा है । इस अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि संयुक्त राष्ट्र संघ में भी शीघ्र ही हिंदी अधिकारिक भाषा के रूप में प्रयोग होने वाली है । इस प्रकार हमने देखा कि हिंदी का भविष्य उज्जवल है और हिंदी के लिए कार्य करना एक राष्ट्रीय सेवा का कार्य है।

8. Conclusion and Suggestion निष्कर्ष और सुझाव :- हिंदी कई गलत धारणाओं और कई भ्रामक तथ्यों के कारण देश में जिस प्रकार से विकसित होने वाली थी , नहीं हो पायी । मगर आज धीरे–धीरे हिंदी का रूप विस्तृत होता गया है। आज हिंदी न केवल राजभाषा ,राष्ट्रभाषा ,संपर्क भाषा के रूप में है बल्कि विश्व भाषा के रूप में भी अपने स्वरूप को विस्तार कर चुकी है । यह निश्चित है कि एक दिन हिंदी विश्व की बहुत ही लोकप्रिय भाषा के रूप में जानी जाएगी । इसके लिए भारतीय भाषाओं के साथ मिलकर हिंदी को विकास करने की योजनाओं को बढ़ावा देना चाहिए। मातृभाषा तथा देश की भाषा हिंदी को अपनाते हुए देश की एकता और अखंडता के लिए हमें प्रयास करना चाहिए । हिंदी जोड़ने वाली कड़ी है ना कि तोड़ने वाली । इस मूलमंत्र को हमें हमेशा याद रखना चाहिए और इसके मजबूती लिए अथक प्रयास करना चाहिए। क्योंकि राष्ट्रीय एकता और

अखंडता के लिए हिंदी की आवश्यकता बहुत–बहुत है । एक रहे हो भारत ****

Hindi Student Study Project Work

हिंदी का महत्व

(Hindi ka Mahatva)

प्रस्तावना

एक स्वतंत्र देश की खुद की एक भाषा होती है, जो उस देश का मान-सम्मान और गौरव होती है। भाषा और संस्कृति ही उस देश की असली पहचान होती है। भाषा ही एक ऐसा जरिया है, जिसकी मदद से हम अपने विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। विश्व में कई सारी भाषाएँ बोली जाती है, जिसमें हिंदी भाषा का विशेष महत्व है। यह भाषा भारत में सबसे अधिक बोली जाती है और विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में दूसरा स्थान है।

हिंदी सिर्फ एक भाषा का काम ही नहीं करती है। यह सभी लोगों को एक दूसरे को आपस में जोड़े रखने का काम भी करती है। हिंदी सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में बोली जाने वाली भाषा है। इसका अध्ययन विदेशों में भी होता है और विश्व के कोने-कोने से लोग भारत सिर्फ हिंदी सिखने के लिए आते है। ऐसा माना जाता है कि संस्कृत भाषा का सरलतम रूप हिंदी भाषा ही है। हिंदी भाषा में संस्कृत के काफ़ी शब्दों का समावेश देखने को मिल जाएगा।

हिंदी भाषा का विकास

विश्व में कुल 3 हजार भाषाएं बोली जाती है, उनमें से हिंदी एक भाषा है। रूप या आकृति के आधार पर हिंदी वियोगात्मक भाषा है। भारत देश में 4 भाषा के परिवार मिलते है, जो भारोपीय, द्रविड़, ऑस्ट्रिक व चीनी तिब्बती है। भारत में सबसे अधिक बोला जाने वाला भाषा परिवार भारोपीय परिवार है।

यह भाषा की आदि जननी संस्कृत है। संस्कृत पाली, प्राकृतिक भाषा से होती हुई और अपभ्रंश तक पहुंचती है। फिर अपभ्रंश से गुजरती हुई प्राचीन/प्रारंभिक हिंदी का रूप लेती है। सामान्यता हिंदी भाषा के इतिहास का आरंभ अपभ्रंश से माना जाता है।

विश्व की प्राचीन और सरल भाषाओं की सूचि में हिंदी को अग्रिम स्थान मिला हैं। हिंदी भारत की मूल है। यह भाषा हमारी संस्कृति और संस्कारों की पहचान है। हिंदी भाषा हमें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान और गौरव प्रदान करवाती है। विश्व की सबसे ज्यादा बोले जाने वाली भाषा में हिन्दी का स्थान दूसरा आता है।

भारत देश में यह भाषा सबसे ज्यादा बोली जाती है इसलिए हिंदी भाषा को 14 सितम्बर 1949 के दिन अधिकारिक रूप से राजभाषा का दर्जा दिया गया। भारत ही एक ऐसा देश है, जिसकी राष्ट्रभाषा और राजभाषा एक ही है। जो यह साबित करता है की भारत देश में हिंदी का कितना महत्व है।

हिंदी भाषा का जन्म लगभग एक हजार वर्ष पहले हुआ था। ऐसा माना जाता है कि हिंदी का जन्म देवभाषा संस्कृत की कोख से हुआ है। संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ट, हिन्दी -यह हिंदी भाषा का विकास क्रम है। हिंदी एक भावात्मक भाषा है, जो लोगों के दिल को आसानी छू लेती है। हिंदी भाषा देश की एकता का सूत्र है।

पुरे विश्व में भारतीय संस्कृति का प्रचार करने का श्रेय एक मात्र हिंदी भाषा को जाता है। भाषा की जननी और साहित्य की गरिमा हिंदी भाषा जन-आंदोलनों की भी भाषा रही है। आज भारत में पश्चिमी संस्कृति को अपनाया जा रहा है, जिसके चलते अंग्रेजी भाषा का सभी क्षेत्रों में चलन बढ़ गया है। वास्तविक जीवन में भले ही हम हिंदी का प्रयोग जरूर करते है लेकिन कॉर्पोरेट जगत में ज्यादातर अंग्रेजी भाषा का ही प्रयोग होता है, जो हमारे लिए एक शर्मनाक बात है।फिर भी दुनिया में हिंदी की बढ़ती पॉपुलरटी को देखकर यह

कहना गलत नहीं होगा की हिंदी भविष्य की भाषा है। एक भारतीय होने के नाते यह हमारा कर्तव्य है की हमें भी हिंदी के महत्व को बढ़ाना देना चाहिए।

हिंदी भाषा का विकास क्रम

संस्कृत→पालि→प्राकृत→अपभ्रंश→अवहट्ट→प्राचीन/प्रारम्भिक हिन्दी

हिंदी भाषा का महत्व

यह एक ऐसी भाषा है, जो सभी धर्मों के लोगों को जोड़े रखने का काम करती है। यह सिर्फ एक भाषा का काम ही नहीं करती, यह एक देश की संस्कृती, वेशभूषा, रहन सहन, पहचान आदि है। हमारे में से कई लोग ऐसी भी है, जो यह मानते है कि वह हिंदी नहीं सीखेंगे फिर भी उनका काम बन जायेगा। लेकिन ऐसा नहीं है क्योंकि भारत में हर व्यक्ति अन्य भाषाओं को मुख्य भाषा के रूप में प्रयोग में नहीं ला सकता है। लेकिन हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसकी मदद से हर भारतीय आसानी से आपस में समझ सकते हैं।

हिंदी को संस्कृत की बड़ी बेटी का दर्जा प्राप्त है। हिंदी बहुत ही सरल भाषा है, जिससे हर कोई सिखकर इसका प्रयोग कर सकता है। यह सिखने में बहुत ही आसान है। हिंदी को सिखने के लिए आपको अधिक खर्चे करने की भी जरूरत नहीं है। हिंदी को मात्र कुछ किताबों की मदद से सिखा जा सकता है। हिंदी भाषा का प्रयोग भारत के लोग अपने बचपन से करना शुरू कर देते है।

हिंदी- एक भावात्मक भाषा

भारत एक ग्रामीण देश है और इसकी अधिकतर जनसंख्या ग्रामीण इलाकों से तालुक रखती है। भारत में सभी अंग्रेजी नहीं जानते। इसलिए भारत में आपको किसी से भी बात करनी हो या फिर संवाद करना हो तो आपको पहले हिंदी का ज्ञान होना ही चाहिए। यह एक ऐसी भाषा है, जिसकी मदद से हम अपनी भावनाओं को बहुत ही सरल तरीके से व्यक्त कर सकते हैं।

हमारे देश में ऐसे बहुत से लोग है, जिनको हिंदी की जानकारी होते हुए भी अन्य भाषओं का प्रयोग करते हैं क्योंकि उनको लगता है कि हिंदी बोलने से उनके चरित्र पर सवाल उठेंगे। ये सोच रखने वाले हिंदी को अधिक महत्व नहीं देते लेकिन उनको यह जानकारी होनी चाहिए कि हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसे सिखने के लिए लोग लाखों रुपये खर्च करके भारत आते है। हिंदी के महत्व को जानने के लिए यही मात्र काफी है।

इंटरनेट युग में हिन्दी

इंटरनेट एक ऐसी जगह है, जहां पर हम हर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। पिछले कुछ वर्षों में भारत और विश्व में इन्टरनेट जिस रफ़्तार से विकसित हुआ है, वो सही में बहुत तारीफ के काबिल है। हिंदी भाषा भी अब इंटरनेट पर तेजी से अपना कब्ज़ा जमा रही है। आज के समय में हिंदी भाषा हर समाचार पत्र से लेकर हिंदी ब्लॉग तक अपनी पहचान हासिल कर रही है।

गूगल और विकिपीडिया जैसी बड़ी वेबसाइट हिंदी को हर व्यक्ति तक पहुँचाने में अपनी हर संभव कोशिश कर रही है। इन्होंने **हिंदी भाषा के महत्व (Hindi kaMahatva)** को समझते हुए इंटरनेट पर ट्रांसलेटर, सर्च, सोफ्टवेयर आदि को विकसित किया जिससे लोगों के लिए हिंदी को जानना और भी आसान हो गया।

आज के समय में इंटरनेट पर हर महत्वपूर्ण चीज की जानकारी हिंदी में मिल रही है, जिससे हिंदी और भी लोकप्रिय होती जारही है। हर कोने में हिंदी की पहचान कायम हो रही है।

हिंदी भाषा के क्षेत्र

ऐसा माना जाता था कि हिंदी उत्तर भारत में ज्यादा बोली जाती है लेकिन अब हिंदी भारत के हर कोने में फैलती गई है और धीरे-धीरे हिंदी भाषा पूरे भारत में लोकप्रिय होती गई। आज के समय में हिंदी भाषा वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना रही है। इसकी हर जगह पर सराहना हो रही है।

आज के समय में हिंदी मुख्य रूप से भारत के सभी राज्यों में बोली जाती है ,इन राज्यों में मुख्य रूप से बिहार, उतरप्रदेश, मध्यप्रदेश, उतराखंड राजस्थान आदि आते है।

यह भाषा भारत के अलावा नेपाल, दक्षिण अफ्रीका, मॉरीशस, अमेरिका, यमन, युगांडा, जर्मनी, न्यूजीलैंड, सिंगापुर आदि में भी बोलने वालों की संख्या लाखों में है। इसके अलावा ऑस्ट्रेलिया, यूके, कनाडा और यूएई में भी हिंदी बोलने वाले और द्विभाषी या त्रिभाषी बोलने वालों की संख्या भी बहुत है।

हिंदी भाषा की विशेषताएं

- इस भाषा को देवभाषा संस्कृत का सरलतम रूप कहा जा सकता है। इसकी लिपि देवनागरी लिपि है।
- हिंदी भाषा एक ऐसी भाषा है जिसमें हम दूसरी भाषा के शब्द भी आसानी से प्रयोग कर सकते है, जिससे हमें आसानी होती है।
- इस भाषा के वर्णमाला में स्वर और व्यंजन दूसरी भाषाओं की वर्णमालाओं की तुलना में बहुत अधिक व्यवस्थित है।
- हिंदी भाषा के वर्ण हम जो भी बोलते हैं, उन्हें आसानी से लिख भी सकते हैं जबकि दूसरी भाषाओं में ऐसी नहीं होता है।
- यह एक ऐसी भाषा है, जिसमें निर्जीव वस्तुओं के लिए लिंग का निर्धारण होता है।
- हिंदी भाषा को पढ़ने के साथ ही इसे आसानी से लिखा भी जा सकता है।
- हिंदी भाषा के शब्दकोश में मौजूद शब्द हर काम के लिए अलग अलग है और ये शब्द बढ़ ही रहे है।
- इस भाषा में साइलेंट लेटर्स नहीं होते हैं, जिसके कारण ही इसका उच्चारण और लेखन में शुद्धता होती है।
- सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रयोग हमेशा बढ़ता ही जा रहा है इसलिए सभी बड़ी बड़ी सोशल मीडिया वेबसाइट ने हिंदी को महत्व देना शुरू कर दिया है।

उपसंहार

हिंदी भाषा के प्रति हमारा सभी का यह कर्तव्य है कि हमें हिंदी के विस्तार के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए। हमें इसका भरपूर सम्मान करना चाहिए। यह भाषा सभी धर्मों को जोड़े रखने का काम करती है। सभी को यह समझाना चाहिए कि हिंदी का प्रयोग करना हीनता का प्रतीक नहीं बल्कि यह हमारा गौरव है।

अब तक हुए विश्व हिंदी सम्मेलन की सूची इस प्रकार है–

क्र.	सम्मेलन	स्थान	वर्ष
1.	प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन	नागपुर, भारत	10-12 जनवरी, 1975
2.	द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन	पोर्ट लुई, मॉरीशस	28-30 अगस्त, 1976
3.	तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन	नई दिल्ली, भारत	28-30 अक्टूबर, 1983
4.	चतुर्थ विश्व हिन्दी सम्मेलन	पोर्ट लुई, मॉरीशस	02-04 दिसम्बर, 1993
5.	5वां विश्व हिन्दी सम्मेलन	पोर्ट ऑफ स्पेन, ट्रिनिडाड एण्ड टोबेगो	04-08 अप्रैल, 1996
6.	छठा विश्व हिन्दी सम्मेलन	लंदन, यू. के.	14-18 सितम्बर, 1999
7.	7वां विश्व हिन्दी सम्मेलन	पारामारिबो, सूरीनाम	06-09 जून, 2003
8.	8वां विश्व हिन्दी सम्मेलन	न्यूयार्क, अमरीका	13-15 जुलाई, 2007
9.	9वां विश्व हिंदी सम्मेलन	जोहांसबर्ग, दक्षिण अफ्रीका	22-24 सितंबर, 2012
10.	10वां विश्व हिंदी सम्मेलन	भोपाल, भारत	10-12 सितंबर, 2015
11.	11वां विश्व हिंदी सम्मेलन	पोर्ट लुई, मॉरीशस	18-20 अगस्त, 2018

12. 12वां विश्व हिंदी सम्मेलन – –

संदर्भ सूची :

1.राज भाषा सहायिका - अवधेश मोहन गुप्त

2.प्रयोजन मूलक हिन्दी - डॉ.रवीद्र श्रीवास्तव

3.हिन्दी भाषा का महत्व - सं.डॉ.अनीता